□□□□□□□ □□□□□□

जनसत्ता, 7 सतिंबर, 2014: सर्वोच्च न्यायालय की पांच सदस्यीय संवधिान पीठ का फैसला आ गया है कि उत्तर प्रदेश सरकारी भाषा (संशोधन) कानून 1989 संवधिानसम्मत है और राज्य में उर्दू को सरकारी कामकाज की दूसरी भाषा घोषति करने का फैसला सही है। इस मामले में ध्यान देने की बात है कि कानून को संवधिान के वरिुद्ध बता कर मुकदमा ल□ने वाला कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश हदिी साहत्यि सम्मेलन था। यानी हदिी-उर्दू की ल□ाई अभी तक जारी है। उर्दू अगर उत्तर प्रदेश में सरकारी कामकाज की दूसरी भाषा बन जाती है, तो इससे हदिी को क्या नुकसान होने वाला है?

आजादी मलिने के बाद उत्तर प्रदेश ही नहीं, समूचे भारत की राजभाषा का दर्जा पाने के बाद भी हदिी को उर्दू के कारण इतनी असुरक्षा क्यों महसूस होती है? क्या इस ग्रंथि के पीछे केवल ऐतहिासकि कारण हैं या सांप्रदायकि सोच भी है, क्योंकि उर्दू अब केवल मुसलमानों की भाषा बन कर रह गई है? दूसरे, यह देखना भी जरूरी होगा कि क्या बार-बार सुना जाने वाला यह वलिाप वास्तवकिता पर आधारति है कि स्वाधीन भारत में उर्दू की हालत बहुत खराब है?

2001 में हुई जनगणना में जो आंक□े सामने आ□ उनसे पता चलता है कि बाईस अनुसूचति भाषाओं में हदिी, बांग्ला, तेलुगू, मराठी और तमलि के बाद उर्दू छठे स्थान पर है। यानी वह गुजराती, कन्न□, मलयालम, ओ□िया, पंजाबी और असमयि से ऊपर है। 2001 की इस जनगणना का यह भी कहना है कि पूरे देश की आबादी का 5.01 प्रतशित उर्दूभाषी था और पांच करो□ पंद्रह लाख व्यक्तियों ने उर्दू को अपनी मातृभाषा के रूप में दर्ज कराया था□ उत्तर प्रदेश, बहिार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, तमलिनाडु, महाराष्ट्र और पश्चमि बंगाल-ये दस राज्य ऐसे हैं जनिमें पूरे देश में उर्दू बोलने वालों की संख्या के □ कप्रतशित से अधकि लोग रहते हैं। इनमें भी उत्तर प्रदेश, बहिार, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और झारखंड में देश की कुल उर्दूभाषी आबादी का 85.8 प्रतशित लोग रहते हैं। अकेले उत्तर प्रदेश में उर्दूभाषियों की संख्या देश की कुल उर्दूभाषी आबादी के □ कचौथाई से भी अधकि है□

जनगणना से □ कमहत्त्वपूर्ण बात यह भी पता चली है कि हालांकि भारत में रहने वाले सभी मुसलमानों की भाषा उर्दू नहीं है, लेकनि केवल मुसलमानों ने उर्दू को अपनी मातृभाषा के रूप में दर्ज कराया है। यानी उर्दू का मुसलमि समुदाय के साथ नाता वास्तवकि है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और पूरी बीसवीं सदी का इतहिास साक्षी है कि हदिी और उर्दू के कंधों पर बंदूक रख कर हदिू और मुसलमि सांप्रदायकिता ने अपनी ल□ाइयां ल□ी हैं। लेकनि क्या अब समय नहीं आ गया, जब इस नरिर्थक झग□े को समाप्त कयिा जा□ और लोकतांत्रकि भारत में हदिी के साथ-साथ उर्दू को भी उचति स्थान दयिा जा□?

हदिी और उर्दू को □ कही भाषा की दो शैलयिां या जु□वां बहनें कहने वालों की भी कमी नहीं है। क्या ऐसी स्थति स्वीकार्य हो सकती है, जसिमें □ कशैली या □ कबहन सहिासन पर बैठी हो और दूसरी को अपने अस्तत्वि के ला□ ल□ाना प□ रहा हो? दरअसल हदिी और उर्दू को □ कही भाषा की दो शैलयिां कहने के पीछे भी क□ई बार यह दृष्टि होती है कि □ कभाषा के रूप में उर्दू का स्वतंत्र अस्तत्वि ही नहीं है और वह तो ख□ी बोली हदिी की ही □ कशैली है□ लेकनि 1932 में प्रकाशति पुस्तक 'हदिी, उर्दू और हदिुस्तानी' में पद्मसहि शर्मा ने इस सच्चाई को स्वीकार कर लयिा था कि 'हदिी-उर्दू बलिकुल जुदा दो भाषा□ बन गई हैं... प्रचलति ठेठ हदिी शब्दों का बहष्किार और उनकी जगह अरबी, फारसी या संस्कृत शब्दों की भरमार भाषा-भेद का □ कप्रधान कारण है। यह प्रवृत्ति पहले नहीं थी□'

जिस तरह हिंदी के झंडाबरदार उसकी प्रगति की राह में रोड़े अटकाते रहे हैं, उसी तरह उर्दू के हमायती उसे आगे बढ़ने से रोकते रहे हैं। दोनों की पूरी कोशिश है कि ऐसी भाषा गढ़ने की है जिसे कम से कम लोग समझ सकें यानी जो भाषा के उद्भव की बुनियादी शर्त के ही विरुद्ध हो। हमें भाषा की जरूरत इसलिए पड़ती है ताकि हम दूसरों के साथ संवाद कर सकें, उनकी बात समझ सकें और अपनी बात समझा सकें। लगभग बारह-तेरह साल पुरानी बात है। मुझे पता चला कि इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में उर्दू पर कि सेमिनार हो रहा है, जिसमें देशी-विदेशी विद्वान, कुछ राजनेता और हिंदी के जाने-माने साहित्यकार राजेंद्र यादव भाग ले रहे हैं। उत्सुकतावश मैं भी चला गया।

सैयद शहाबुद्दीन समेत कई मुसलिम वक्ता बोले, जिनमें खुर्शीद आलम खां भी शामिल थे। मैं औरों की बात को काफी कुछ समझ गया, लेकिन खुर्शीद आलम खां का अधिकांश भाषण मेरे पल्ले नहीं पड़ा, क्योंकि वे इतनी अरबी-फारसी में लिपटी उर्दू बोल रहे थे जिसे समझना मेरे लिए संभव नहीं था। जब राजेंद्र यादव ने बोलना शुरू किया, तो उपस्थित उर्दूप्रेमी समुदाय ने टोका-टोकी शुरू कर दी। वापस आते हुए मैं पूरे रास्ते सोचता रहा कि क्या इसी रास्ते पर चल कर उर्दू तरक्की करेगी?

मुझे आज तक समझ में नहीं आया कि खड़ी बोली के स्वभाव के विपरीत उर्दू वाले एकवचन को बहुवचन बनाते समय फारसी की नकल क्यों करते हैं? खुर्शीद आलम खां का पहला वाक्य ही था: 'अभी आप हजरात ने जो तकरीर सुनी...'। और मैं सोचने लगा कि तकरीर की जगह तकरीरें क्यों नहीं कहा जा सकता, जो खड़ी बोली की प्रकृति के अनुरूप है। अक्सर आपने लोगों को 'हालातों' बोलते हुए सुना होगा। दरअसल, वे खड़ी बोली के स्वभाव के अनुसार हालात को एकवचन समझ कर उसका बहुवचन बनाते हैं। हिंदी और उर्दू संभवत: विश्व की अकेली ऐसी दो भाषाएं हैं, जिनका भाषिक आधार एक है। 'मैं बाजार जा रहा हूं' हिंदी का वाक्य है या उर्दू का?

फिराक गोरखपुरी का कहना था कि भाषा क्रियापद के कारण अलग होती है और अगर किसी वाक्य में अधिकांश शब्द किसी दूसरी भाषा के हों, तो भी उसे उसी भाषा का वाक्य माना जाएगा जिस भाषा के क्रियापद का इस्तेमाल किया गया है। इस दृष्टि से हिंदी और उर्दू वास्तव में एक ही भाषा हैं। लेकिन यह भी वास्तविकता है कि उनका साहित्यिक और वैचारिक रूप एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हो चुका है और अब घड़ी की सुइयों को पीछे नहीं घुमाया जा सकता। लेकिन इस बात की कोशिश तो की ही जा सकती है कि इन दो रूपों के बीच का फासला जितना कम किया जा सके, किया जाए। और इसके लिए हिंदीवालों और उर्दूवालों, दोनों को कोशिश करनी होगी।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में जब 1974 में भारतीय भाषा केंद्र खुला, तो उसमें हिंदी और उर्दू के दो प्रख्यात आलोचक- नामवर सिंह और मुहम्मद हसन- प्रोफेसर बन कर आए। उन्होंने जो पाठ्यक्रम तैयार किया, वह बेहद आधुनिक और लगभग क्रांतिकारी था। हिंदी के विद्यार्थियों के लिए उर्दू सीखना और उसके बेसिक कोर्स में उत्तीर्ण होना अनिवार्य था और उर्दू के विद्यार्थियों के लिए हिंदी का। आज भी शायद ही देश का कोई और विश्वविद्यालय हो जहां ऐसी व्यवस्था है।

क्या उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में पहली कक्षा से ही स्कूली बच्चों को हिंदी और उर्दू- दोनों भाषाएं नहीं पढ़ाई जा सकतीं? दोनों भाषाओं का ज्ञान ही उन्हें इस क्षेत्र की गंगा-जमुनी कही जाने वाली संस्कृति से परिचित करा सकता है। इस बात से शायद ही कोई इनकार कर सके कि उर्दू जानने वाले हिंदी लेखकों का गद्य बहुत साफ-सुथरा होता है, क्योंकि उसमें दोनों भाषाओं के शब्द इस तरह मिल कर आते हैं जैसे दूध में चीनी। प्रेमचंद, शमशेर और नामवर सिंह का गद्य इसकी मिसाल है। उर्दू की जानकारी के अभाव में हिंदी वाले 'खुलासा' और 'खिलाफत' जैसे शब्दों को उन अर्थों में इस्तेमाल करते जाएंगे, जिन्हें सुन कर उर्दू वाले गश खाकर गिर पड़ें।

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लि क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta